Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3 & 4)
Special Combined Issue (September 2025 — April 2026. pp. 200-213)

शिक्षक की प्रभावकारिता : अवधारणा एवं फ्रेमवर्क

केवलानन्द काण्डपाल*

सारांश

शिक्षा की गुणवत्ता के लिए शिक्षण का प्रभावकारी होना बहुत जरुरी है। शिक्षक की प्रभावकारिता न केवल शिक्षा की गुणवत्ता के लिए जरुरी है वरन शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी इसकी अहम् भूमिका है। इसका श्रेय एवं प्रेय दोनों शिक्षक को मिलना ही चाहिए। वस्तुतः शिक्षक का बहु–प्रशंसित होना और प्रभावकारी होना, दोनों अलग अलग बातें हैं। यदि शिक्षक की प्रशंसा उसके प्रभावकारी होने के कारण है तभी शिक्षक के लिए इसका अर्थ है। इससे शिक्षक को को यह जानने–समझने में मदद मिलती है की वह दूसरे शिक्षकों से किस मामले में अलग है? शिक्षक की प्रभावकारिता के आलोक में निर्मित जन–छवि, शिक्षक को इस बात के लिए प्रेरित करती है कि वह अपने प्रभावकारी शिक्षण–अधिगम प्रयासों को जारी रखें और इसे निरंतर बेहतर करने की दिशा में प्रयास करें। इस विषय पर विभिन्न शिक्षकों, अभिभावकों, समुदाय के लोगों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं बच्चों से बातचीत के अनुभवों के आलोक में इस आलेख में शिक्षक की प्रभावकारिता को जानने–समझने का प्रयास है। बातचीत के साथ–साथ अवलोकन अनुभवों के आधार पर उन घटकों/कारकों को पहचानने की कोशिश की गयी है कि शिक्षक की प्रभावकारिता क्या है? कब हम कह सकते हैं कि शिक्षण उपक्रम प्रभावकारी रहा? वे कौन–कौन से घटक/कारक हैं? जो प्रभावकारी शिक्षण के लिए बहुत जरुरी हैं। इसके लिए एक उपयुक्त फ्रेमवर्क पर विचार करने का प्रयास किया गया है। **(237 शब्द)**

* प्रधानाचार्य, रा0 इ0 का0 मंडलसेरा, बागेश्वर (उत्तराखंड)

पृष्ठभूमि

शिक्षण कार्य एक गहन जिम्मेदारी का काम है। अन्य पेशों की तुलना में शिक्षक का पेशा कुछ जटिल भी है। मेरे इस विश्वास के पीछे कुछ पुख्ता कारण हैं। अन्य पेशों में पेशेवरों के पास आने वाले क्लाइंट (जिसे समझने के लिए हम यहाँ उपभोक्ता भी कह सकते हैं।) को कमोवेश यह स्पष्ट तो होता ही है की उनकी समस्या क्या है? उनकी जरूरतें क्या हैं? उनको किस प्रकार की मदद की जरुरत है? जिसके आधार पर पेशेवर गुणवत्ता युक्त सेवा उपलब्ध करने के लिए उपयुक्त रणनीति एवं प्रक्रियाएं निर्धारित कर सकता है। एक डॉक्टर के पास आने वाले मरीज को मोटा–माटी यह तो मालूम होता है कि उसको परेशानी क्या है? और उसे यह भी पता है कि वह चाहता क्या है? मसलन वह ठीक होना चाहता है। इसी प्रकार अन्य पेशों के सम्बन्ध में विचार करें तो हम देखते हैं कि क्लाइंट को अपनी कठिनाई एवं आवश्यकता का कुछ न कुछ संज्ञान तो है तथा वह क्या चाहता है इसकी अस्पष्ट ही सही कुछ न कुछ रूपरेखा उसके मस्तिष्क में जरुर होती है। एक अध्यापक इस मामले में अन्य पेशेवरों की तुलना में चुनौतीपूर्ण स्थिति में होता है। यह चुनौतियाँ एक से अधिक होती हैं। प्रथम तो एक अध्यापक के पास जो बच्चा आता है उसे ठीक–ठीक यह मालूम नहीं होता कि उसकी कठिनाई, चुनौतियाँ एवं जरूरतें क्या–क्या हैं? दूसरा, वह यह बताने की स्थिति में भी नहीं होता कि उसको किस प्रकार की सहायता की जरुरत है? तीसरा, वह किस दिशा में आगे बढ़ना चाहता है ? यह रूपरेखा भी उस बच्चे को स्पष्ट नहीं होती है। असल अध्यापक वह नहीं है जिसने अध्यापक की शिक्षा पायी और अध्यापक बन गया बल्कि वह व्यक्ति ही असल अध्यापक है जो यह विश्वास करता है की उसे अध्यापक ही होना चाहिए, इसके अलावा वह कुछ और नहीं हो सकता। वह चयन के कारण इस पेशे में है न कि मात्र संयोगवश।

औचित्य

बहुत देर से ही सही अब आम लोग भी इस बात को स्वीकारने लगे हैं की शिक्षण कार्य भी एक पेशा है, किसी अन्य पेशे की तरह इसकी सफलता का आंकलन इस आधार पर किया जाना चाहिए की इसकी प्रभावकारिता किस प्रकार की है? इस प्रभावकारिता के दायरे में शिक्षण की गुणवत्ता, विद्यार्थी के लिए सीखने के प्रतिफल (Learning Out Come) और शैक्षिक उद्देश्यों की संप्राप्ति तीनों ही आ जाते हैं। शिक्षण की प्रभावकारिता, इस आधार पर निर्धारित होती है/होनी चाहिए कि शिक्षक ने शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक बच्चे की अधिगम सम्बन्धी जरूरतों को संबोधित करने के लिए क्या कुछ किया? और इससे बच्चे की अधिगम जरूरतें किस प्रकार से पूरी हो पायीं? अब शिक्षाविद इस बात पर एक मत हैं कि कक्षा के प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, तरीका, रुचियाँ अलग–अलग हैं। ऐसे में प्रत्येक बच्चे को सिखाने के लिए शिक्षण का एक ही तरीका कारगर नहीं हो सकता है और इस तरह का शिक्षण–कर्म शिक्षण उपक्रम तो कहा जा सकता है परन्तु इसके प्रभावकारी होने के लिए

शिक्षण उपक्रम के साथ–साथ सीखने वाले बच्चे की दृष्टि से यह भी देखा जाना जरुरु होगा कि बच्चे के लिए इस सीखने के क्या मायने हैं? क्या प्रतिफल है? गुणवत्ता क्या है? यदि बच्चे के द्वारा जो कुछ भी सीखा गया है, वह इन कसौटियों पर खरा नहीं उतरता है तो इसके कई कारण हो सकते है, पर इतना निश्चित है की इनमें से एक प्रमुख कारण शिक्षण की प्रभावकारिता में कमी है। **अकीरी एवं उग्बोरूग्बो (२009)**[1] ने अपने एक अध्ययन में पाया की 'यदि शिक्षक प्रभावी है तो इससे विद्यार्थियों का अकादमिक प्रदर्शन अच्छा होगा।'

सेमिनार की मुख्य थीम पर गंभीरता से चिंतन–मन करने के पश्चात् एक स्वाभाविक प्रश्न मुझे उद्देलित करता रहा कि मुख्य टीम एवं थीम के उपविषयों (कक्षा–कक्ष प्रबंधन और नेतृत्वशीलता, मूल्यांकन और आंकलन, सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग, नवाचारी अभ्यास, पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों पर आधारित नवाचार, समावेशी शिक्षण से सम्बंधित नवाचार आदि) का सम्बन्ध एवं परिणाम तो शिक्षक की प्रभावकारिता से है। अतः सेमिनार की थीम एवं इसके उपविषयों के आलोक में शिक्षक की प्रभावकारिता को जानने समझने का प्रयास किया जाए। शिक्षक की प्रभावकारिता की अवधारणा की स्पष्टता का लाभ यह होगा कि शिक्षक जो कुछ भी नवाचारी उपक्रम करते हैं, शिक्षण प्रक्रियाओं में जो कुछ भी बदलाव लाते हैं, उसकी प्रभावकारिता के आलोक में जांच परख सकें। इसके लिए शिक्षक की प्रभावकारिता को जांचने–परखने के लिए एक सुस्पष्ट फ्रेम वर्क उपलब्ध होना चाहिए। इस दृष्टि से इस विषय पर परचा लिखने का प्रयास किया गया है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

इस पर्चे को लिखने से पूर्व शिक्षक की प्रभावकारिता को जानने–समझने के लिए इस विषय पर उपलब्ध साहित्य, पुस्तकें एवं शोधपत्रों का गंभीरता से अध्ययन किया गया। इसके लिए शिक्षक की है सियत/प्रास्थिति एवं सामर्थ्य के बारे में प्रोफेसर कृष्ण कुमार की पुस्तक, गुलामी की शिक्षा और राष्ट्रवाद, विशेषकर इसका अध्याय 4 दब्बू तानाशाह–शिक्षक के व्यक्तित्व का विरोधाभास (2006), आर्थर मेहयू की पुस्तक दि एजुकेशन ऑफ इंडिया (1926) से अवधारणात्मक समझ बनाने में मदद मिली। इसके अतिरिक्त पाठ्य चर्या नवीनीकरण के लिए शिक्षक शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2009), राष्ट्रीय पाठ्य चर्या की रूपरेखा 2005 (2006), जॉन देयुवी की पुस्तक स्कूल ऑफ टुमारो (1916), एवं विभिन्न शोध पत्रों, विशेषकर– Students' perceptions of caring teachers' classroom motivation, and students' subjective interpretation of teachers, behavior (Wentzel C.G. 1997), What our student say about how we teach (Ehindero, O.J., 2000), Strategies for teachers: Teaching content and thinking skills (2002) आदि ने शिक्षक की प्रभावकारिता के बारे में एक फ्रेमवर्क के बारे में विचार करने का अकादमिक साहस प्रदान किया।

अध्ययन का उद्देश्य

यह शोध पत्र अवधारणात्मक पत्र है, जिसमे शिक्षक की प्रभावकारिता की अवधारणा के बारे में विचार करने का प्रयास है। अतः इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य निम्न शोध प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना है–

- शिक्षक की प्रभावकारिता की अवधारणा क्या है ? इसको कैसे परिभाषित करेंगे?
- शिक्षक की प्रभावकारिता का आंकलन किस प्रकार से किया जा सकता है?
- शिक्षक की प्रभावकारिता का आंकलन करने के लिए क्या कोई फ्रेम वर्क हो सकता है?

क्रियाविधि

यह अध्ययन एक शुरूआती प्रस्ताव के रूप में है और अवधारणात्मक प्रकृति का है, सो इसके लिए विश्लेष्णात्मक एवं विवरणात्मक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। इस शोध पत्र में शिक्षक की प्रभावकारिता की अवधारणा एवं इसके लिए उपयुक्त फ्रेमवर्क पर विचार किया गया है। इसके लिए समझ विकसित करने की दृष्टि से गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करने के प्रयास में सम्बंधित पुस्तकों एवं शोधपत्रों के आधार पर समझ विकसित करने की कोशिश की गयी है। यह अध्ययन सम्बंधित क्षेत्र में शुरूआती प्रस्ताव के रूप में है, अतः न्यादर्श एवं शोध उपकरणों की आवश्यकता महसूस नहीं की गयी।

चर्चा

शिक्षक की प्रभावकारिता

प्रभावकारिता के सन्दर्भ में शिक्षण कार्य अन्य पेशों में एक आधारभूत विभेदक अन्तर दिखलायी देता है वह यह कि अन्य पेशों में उपभोक्ता की जरूरतें सेवा प्रदाता को स्पष्ट होती हैं, उसी के अनुरूप सेवा देकर उपभोक्ता की संतुष्टि/असंतुष्टि का पता भी तुरंत लग जाता है परन्तु शिक्षक के मामले में एक तो विद्यार्थी यह ठीक–ठीक बता पाने की स्थिति में नहीं होता कि उसकी ठीक–ठीक जरूरतें क्या हैं? (प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के सन्दर्भ में यह तथ्य एकदम सही है।) और दूसरा यह संतुष्टि न केवल शिक्षक/शिक्षिका के प्रयासों पर निर्भर नहीं है वरन अधिगमकर्ता की सहभागिता भी समान रूप से जरुरी है। अधिगमकर्ता की सहभागिता अन्य घटकों के साथ–साथ इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक का प्रयास कितना प्रभावकारी है?

शिक्षक (विशेषकर सरकारी विद्यालयों के शिक्षक) की जन छवि की निर्मिति में प्रचार–प्रसार, मीडिया एवं अन्य घटकों की भूमिका के सापेक्ष शिक्षक/शिक्षिका के प्रयासों एवं उनकी

प्रभावकारिता का संज्ञान कम ही लिया जाता है। ऐसे में शिक्षक/शिक्षिकाओं में आत्म छवि को लेकर अस्पष्टता का भाव रहता है। शिक्षक की जन छवि एवं आत्म छवि का मूलभूत आधार शिक्षक/शिक्षिकाओं की प्रभावकारिता होनी चाहिए और इस प्रभावकारिता के बारे में सबसे उपयुक्त राय शिक्षक के अलावा अधिगमकर्ता की ही हो सकती है। हम अपने पढने–लिखने के दिनों को याद करें तो हम स्पष्ट रूप से कह सकते है कि अमुक शिक्षक क्या गजब पढाते थे, उनकी कक्षा में सीखी गयीं चीजें मेरे लिए बहुत काम की थी, उस विषय विशेष को और अधिक गहराई से जानने–समझने की रूचि जगी, आगे की कक्षाओं में उस विषय को पढने में मुझे बहुत मदद मिली। इसी प्रकार जब हम शिक्षक के रूप में अपने शिक्षण उपक्रम पर चिंतन (Reflection) करते हैं (वस्तुतः हमें ऐसा करना ही चाहिए) तो हम महसूस करते हैं कि आज कक्षा में बच्चों की सहभागिता कैसी रही ? बच्चे ने अपनी जिज्ञासाएं रखी कि नहीं, कक्षा में मेरा एकालाप नहीं था वरन बच्चों की सक्रियता थी, बच्चों के चेहरे पर सीखने का आनंद था कि नहीं, आज कक्षा के अनुभवों से में संतुष्ट हूँ/नहीं हूँ, मेरा आज का प्रयास, बच्चों को पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने में कितने मददगार होंगे ? (यह पता लगाने का हुनर तो शिक्षक में होता ही हैध्होना ही चाहिए)। इससे शिक्षक की प्रभावकारिता के कुछ सूत्रों को पकड़ने में हमें मदद मिल सकती है। शिक्षक की प्रभावकारिता के विचार को निम्न रेखाचित्र के द्वारा समझने में आसानी होगी–

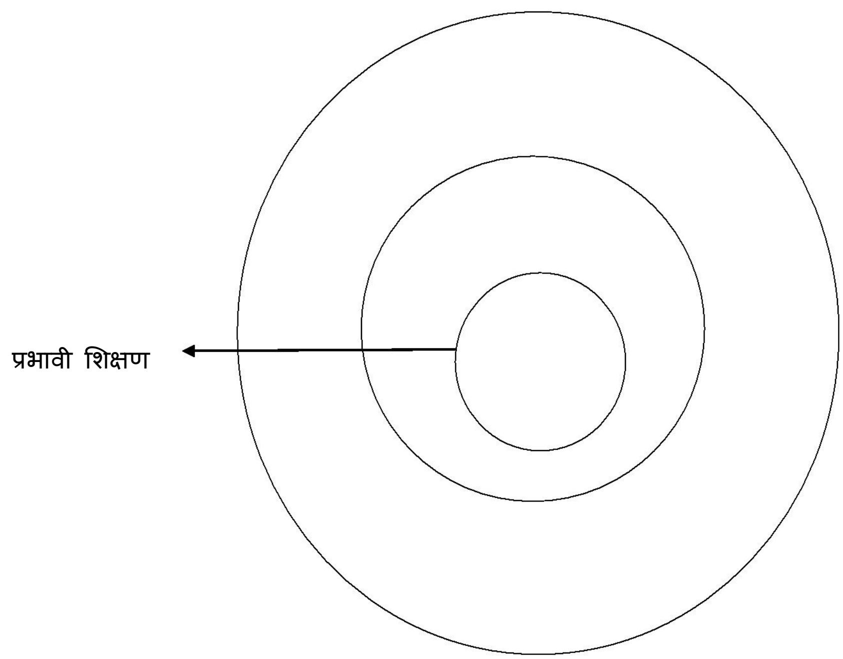

रेखाचित्र : प्रभावी शिक्षण

व्याख्या

यदि शिक्षक के शिक्षण–अधिगम प्रयासों से अधिगामकर्ता को विषयों में निर्धारित अधिगम स्तर की संप्राप्ति होने के साथ शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की संप्राप्ति भी होती है तभी हम कह सकते हैं कि शिक्षक का शिक्षण प्रभावी रहा। इसके लिए शिक्षक द्वारा नवाचारी प्रयास, आई0सी0टी0 का उपयोग, समावेशी कक्षा–कक्ष जैसे प्रयास किये जाते हैं। यहाँ पर महत्वपूर्ण है कि यदि शिक्षक के शिक्षण के परिणाम स्वरूप विषयों में विद्यार्थी द्वारा विषयगत अधिगम संप्राप्ति नजर आती है परन्तु शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की संप्राप्ति नहीं होती है तो इससे यह अनुमान मिलता है कि विद्यार्थी अंक तो अच्छे प्राप्त कर रहे हैं (संभव है कि रटने के कारण ऐसा हो रहा हो) परन्तु यह सीखना विद्यार्थियों के व्यवहार में परिलक्षित नहीं हो पा रहा हो। शिक्षण को तभी प्रभावी कहा जा सकता है जबकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के परिणामस्वरूप शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की संप्राप्ति भी संभव हो सके।

शिक्षक की प्रभावकारिताका आंकलन

महान भारतीय मनीषी एवं दार्शनिक डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की केन्द्रीयता एवं प्रभावकारिता के बारें कही गयी बात इस परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है कि अन्य सभी चीजों की कमी को एक अच्छा शिक्षक पूरा कर सकता है परन्तु एक अच्छे शिक्षक की कमी को अन्य सभी चीजें मिलकर भी पूरा नहीं कर सकती हैं। शिक्षक की प्रभावकारिता, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का एक ऐसा साझा अनुभव है, जो अधिगमकर्ता एवं शिक्षक द्वारा सामूहिक रूप से अनुभूत किया जा सकता है। बाहरी पक्ष केवल अनुमान ही लगा सकता है। इसलिए किसी बाहरी उपकरण से इस बात का अंदाजा मात्र ही हो पता है कि शिक्षण–अधिगम प्रभावकारी है या नहीं। वस्तुतः यह रोजमर्रा की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का गुणात्मक आंकलन है, जिसको समंकों में बाधना एक तरह से मुश्किल काम है। शिक्षक की प्रभावकारिता एक गुणात्मक तथ्य है, शिक्षण की प्रभावकारिता का परिणाम शिक्षण की गुणवत्ता है। शिक्षा की गुणवत्ता के आयामों के बारे में **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा (2005)** बहुत स्पष्टता के साथ उल्लेख करती है कि 'जब व्यवस्था प्रत्येक बच्चे तक पहुँचने का प्रयास करती है तो गुणवत्ता का मुद्दा एक नयी तरह की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। यह मान्यता की गुणवत्ता सुविधा का अनुसरण करती है, सहभागिता पर आधारित उस दर्शन से असंगत बैठती है जिसका व्यवहार भारत राजनीतिक क्षेत्र में करता है......बच्चों के लिए जानकारी व हुनर के सन्दर्भ में परिकल्पित अनुभवों के दृष्टिकोण से भी गुणवत्ता के आयाम को परखना आवश्यक है।'[2]

शिक्षक की प्रभावकारिता का आंकलन हेतु फ्रेम वर्क

सामान्य जन किसी विद्यालय की प्रभावकारिता का अनुमान इस बात से करते है कि अमुक विद्यालय से पढ़े छात्र कहाँ–कहाँ चयनित हो रहे हैं? किन–किन पदों पर कार्यरत हैं? समाज में किस प्रकार की भूमिका में है? इससे विद्यालय के प्रभावकारी होने का एक अनुमान

तो मिलता है परन्तु ऐसा भी हो सकता है की उस विद्यलय के सभी शिक्षक प्रभावकारी ना हों, कुछ शिक्षकों का शिक्षण प्रभावकारी हों तथा कुछ का शिक्षण औसत या उससे भी कम हो। ऐसे में यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि उन घटकों/कारको को चिन्हित करने का प्रयास किया जाए जिनके आलोक में इस बात का अनुमान लगाया जा सके की कब हम कह सकते हैं कि अमुक शिक्षक का शिक्षण प्रभावकारी है/नहीं है। प्रभावकारी शिक्षण, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है, अतः हमें इसके घटकों/कारको को इसी में तलाशना होगा। शिक्षक की प्रभावकारिता के आंकलन हेतु एक फ्रेमवर्क की जरुरत है। इससे यह जानने–समझने में मदद मिलेगी कि हम शिक्षक के शिक्षण कार्य की प्रभावशीलता का सटीक अनुमान कर सकें। यह फ्रेम वर्क इस कारण से भी जरुरी है की वर्तमान में विद्यार्थियों की अधिगम संप्राप्ति के आंकलन के लिए किये जाने वाले उपक्रम से विद्यार्थियों की अधिगम स्थिति की जानकारी तो हो जाती है और किस जनपद विशेष/विद्यालय विशेष के आंकड़े प्राप्त होते है परन्तु इससे से यह ठीक–ठीक अनुमान नहीं मिलता है कि इस परिणाम के पीछे शिक्षक की शिक्षण प्रभावकारिता का क्या योगदान रहा। इसलिए शिक्षण प्रभावकारिता के लिए एक सुस्पष्ट फ्रेमवर्क की आवश्यकता है। इस फ्रेमवर्क के निरूपण से पूर्व उन घटकों पर स्पष्टता होनी जरूरी है जिनके आलोक में शिक्षण कार्य को प्रभावशीलता के पैमाने पर जांचा परखा जा सके। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की प्रभावकारिता का अनुमान निम्न घटकों/कारको के आलोक में करने की आवश्यकता होगी–

1. **शिक्षा के लक्ष्य एवं विषय के उद्देश्यों की स्पष्टता–** शिक्षण के प्रभाव कारी होने की पहली कसौटी यह है कि शिक्षक को शिक्षा के लक्ष्य की स्पष्टता हो। 'शिक्षा के लक्ष्यों में व्यापक दिशा निर्देश हैं जो शैक्षणिक प्रक्रियाओं के तय किये गए आदेशों और स्वीकृत सिद्धांतों से संगति बिठाने में मदद करते हैं।'[3] **(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा, 2005)**. शिक्षक के लिए विषय के उद्देश्यों की स्पष्टता बहुत जरुरी है। प्रत्येक विषय के उद्देश्य शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों की संगति में होते हैं। शिक्षक को किसी भी विषय की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में हमेशा सजग रहने की जरुरत होती है कि इस दौरान ऐसा कोई भी कृत्य घटित ना हो जाए जो शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों से असंगत दिशा में हो। उदाहरण के लिए, प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा का सामान्य लक्ष्य बच्चों में लोकतंत्र हेतु उपयुक्त मूल्यों का बीजारोपण करना है। अतः किसी भी विषय की पाठ्यचर्या एवं शिक्षण प्रक्रिया में लोकतंत्र हेतु उपयुक्त मूल्य, जैसे स्वतंत्रता, समानता, न्याय, व्यक्ति की गरिमा, अखंडता की अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का सामान्य लक्ष्य किशोर को समाज के उपयोगी नागरिक की भूमिका के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों का बीजारोपण करना है जो लोकतंत्र हेतु उपयुक्त मूल्यों की संगति में हो। इसलिए इस स्तर पर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता किशोर को अपनी रुचि एवं सामर्थ्य के विषय क्षेत्र में आगे

बढने के क्रम में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया संचालित की जानी चाहिए। विद्यालयी पाठ्यचर्या में कोई विषय एवं गतिविधि क्यों संचालित किया जा रहा है? इसका तार्किक आधार शिक्षक को स्पष्ट होना चाहिए और इस बात का भी शिक्षक को हमेशा भान रहना चाहिए की उसका शिक्षण कृत्य विषय शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में और शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति के क्रम में है। छोटी कक्षाओं में अध्यापक को इस मामले में अतिरिक्त सजगता की जरुरत है।

2. **विषय ज्ञान–** शिक्षक, कक्षा में जिस भी विषय को लेकर बच्चों के साथ काम करता है, उस विषय की प्रकृति, विकास–क्रम एवं अद्यतन प्रगति के बारे में सम्यक जानकारी और स्पष्टता होनी आवश्यक है। शिक्षक को विषय का अध्यवसायी होना जरुरी है, प्रकाण्ड विद्वान न भी हो तो काम चल जायेगा परन्तु उस विषय विशेष में अभिरूचि, उत्साह, हमेशा नया जानने–समझने की लगन के बिना तो बिलकुल भी नहीं चल पायेगा। यदि कोई शिक्षक इसके बिना अपना शिक्षण कर्म बरत रहा है, तो ऐसा शिक्षण एक रूटीन शिक्षण तो कहा जा सकता है परन्तु प्रभावकारी शिक्षण नहीं। प्रायः हम अपने व्यावहारिक अनुभों से जानते हैं कि किसी विषय में बच्चों की अभिरूचि बढ़ जाती है, उस विषय विशेष की कक्षा का विद्यार्थी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं तथा कुछ मामलों मे इसके विपरीत भी देखने–सुनने में आता है। विषय विशेषज्ञ होना एक बात है, अपने विषय ज्ञान को कक्षा की प्रक्रिया में इस प्रकार से बुन लेना कि इससे अधिगमकर्ता के मन में शिक्षक की विद्वत्ता का आतंक भी पैदा ना हो और बच्चा अपने ज्ञान का सृजन स्वयं कर सकें (प्रारम्भिक स्तर से माध्यमिक स्तर पर सीख रहे बच्चों के सन्दर्भ में तो यह बहुत जरुरी है।), यह एकदम भिन्न बात है। एक बार किसी विषय को पढ़ लेने के बाद, हमेशा उसी ज्ञान के आधार पर शिक्षण कार्य नहीं किया जा सकता। शिक्षक की अध्येतावृति, प्रभावकारी शिक्षण का एक महत्वपूर्ण आधार है। कहा भी गया है कि एक शिक्षक, दूसरों को तब तक नहीं सिखा सकता है जब तक कि वह स्वयं सीखने की प्रक्रिया में नहीं है। सीखने वाले को किसी विषय का रसास्वादन तभी कराया जा सकता है जबकि सिखाने वाला उस विषय का रस–पान करने का हुनर जानता है। किसी विषय विशेष में पाठ्य वस्तु के चयन एवं संयोजन में यह बहुत उपयोगी है, जिसका प्रभाव शिक्षक की प्रभावकारिता पर और अंततः शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है।

3. **बाल मनो–विज्ञान एवं शिक्षणशास्त्र–** प्रभावकारी शिक्षक के लिए जरुरी है कि वह अधिगमकर्ता के मनोविज्ञान को जनता समझता है। यहाँ पर शिक्षक से विशेषज्ञ मनोविज्ञानी होने की अपेक्षा बिलकुल नहीं है परन्तु उसे इस बात की जानकारी जरुर होनी चाहिए की किसी विशेष उम्र में बच्चा/किशोर किस प्रकार का व्यवहार करता है? उसकी रुचियाँ/अभिरुचियां क्या है? उसके सीखने की गति/तरीका क्या है?

किस बात से उबता है? किस बात से उत्साहित होता है? एक संवेदनशील (Sensitive) शिक्षक के लिए यह जानना बहुत मुश्किल नहीं है, कक्षा–कक्ष की व्यवहारिक प्रक्रियाओं के अनुभव से, यह जानने–समझने का हुनर निरंतर समृद्ध होता रहता है। इन सभी बातों की न केवल शिक्षक को जानकारी होनी चाहिए वरन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में इसका संज्ञान भी लेता हो।

शिक्षणशास्त्र, इस मामले में हमारी मदद करता है कि किसी आयु विशेष के अधिगमकर्ता के सीखने–सिखाने का क्या विशेष तरीका हो सकता है? उम्र के विभिन्न स्तरों पर इसमें बदलाव करना क्यों जरुरी है? जिस प्रकार से हम 6 वर्ष के बच्चे के साथ सीखने–सिखाने का काम करते हैं, उसी तरह से 16 वर्ष के किशोर के साथ नहीं काम नहीं कर सकते हैं, एक व्यस्क के साथ सीखने–सिखाने का तरीका बिलकुल अलग ही होगा। शिक्षणशास्त्र की जानकारी शिक्षक की इस मामले में मदद करती है की किसी स्तर विशेष एवं विषय विशेष को कैसे पढाया जाना चाहिए? मनो–विज्ञान एवं शिक्षणशास्त्र की समझ से हमें यह मदद मिलती है कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अधिगम कर्ता को विषय का स्वाद कैसे दिया जाए? कब एक्सप्लोर (Explore) के अवसर देने हैं? कब और किस तरह से मूल्यांकन करना है? प्रत्येक अधिगम कर्ता अलग–अलग तरीके से एवं भिन्न गति से सीखता है। इस समझ को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में समाहित करने से शिक्षण प्रभावकारी हो सकता है, इस प्रकार के अनुभव के मायने सीखने वाले और सिखाने वाले, दोने के लिए इस प्रकार के अनुभव अर्थ–पूर्ण होंगे।

4. **शैक्षिक तकनीकी का उपयोग–** सीखने–सिखाने की गुणवत्ता को बढाने में तकनीकी अहम् भूमिका निभा सकती है, बशर्ते कि हम इसकी मात्रा, समय, विविधता एवं प्रारूप का चयन करते समय अधिगमकर्ता की शैक्षिक जरूरतों का ख्याल रखें। एक सी सामान तकनीकी प्रत्येक अधिगम कर्ता की जरूरतों को संबोधित नहीं कर सकती है, इसका संज्ञान तकनीकी के चयन के सन्दर्भ में रखें। आज हम सभी इस बात पर सहमत हैं कि विभिन्न विषय अनुशासनों में सीखने–सिखाने के लिए बहुत से तकनीकी विकल्प अपनाये जा रहे हैं। आज जरुरत इस बात की भी है कि कक्षा–कक्ष में मौजूद प्रत्येक अधिगमकर्ता की शैक्षिक जरूरतों को संबोधित किया जाए जिससे कक्षा समावेशी बन सके, जहाँ पर प्रत्येक सीखने वाले को अपनी रूचि एवं गति से सीखने के अवसर मिल सकें। सूचना–संचार तकनीकी के प्रयोग से प्रत्येक अधिगम कर्ता के लिए अवसर सृजित किये जा सकते हैं। ऐसी कक्षा जहाँ प्रत्येक बच्चे के लिए सीखने के समुचित अवसर उपलब्ध हों, बच्चे के दृष्टिकोण से प्रभावकारी कक्षा कही जा सकती है और शिक्षक की दृष्टि से यह इस आधार पर प्रभावकारी होगी कि कक्षा में मौजूद प्रत्येक बच्चे को शिक्षक के प्रयासों का लाभ मिल

पा रहा है। आजकल तो लगभग सभी विषयों में प्रत्येक स्तर के अधिगमकर्ताओं के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। महत्वपूर्ण यह है कि शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए किस प्रकार से करते हैं? यह विषय के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए और इस क्रम में अधिगमकर्ता की विषयगत शैक्षिक जरूरतों को पूरा करने के क्रम में होना चाहिए। कई अवलोकनों में यह भी देखने में आया है कि बच्चे कंप्यूटर में कुछ करते दिखायी देते हैं, बच्चों से बात करने पर पता चलता है कि बच्चे किसी विषय विशेष को सीखने के बजाय कोई गेम में व्यस्त हैं। इससे बच्चे कंप्यूटर परिचालन और कुछ तकनीकी बातें भले ही सीख रहे हों परन्तु जहाँ तक विषय को सीखने के अवसरों का प्रश्न है, अलाभकर स्थिति में ही कहे जायेंगे। यह न उन बच्चों के हिसाब से विषय सीखने के लिए प्रभावकारी है और ना ही शिक्षक की प्रभावकारिता को अभिव्यक्त करता है।

5. **नवाचार–** किसी भी शिक्षक का शिक्षण प्रभावकारी तभी कहा जा सकता है जबकि कक्षा के सभी अधिगमकर्ताओं को सीखने के अवसर उपलब्ध कराता है, तभी हम इसे समावेशी कक्षा कह सकते हैं। जब शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों के आलोक में पाता है कि कुछ अधिगमकर्ताओं के लिए उसका शिक्षण उपयोगी साबित नहीं हो पा रहा है, यह चिंतन शिक्षक को नवाचार के लिए प्रेरित करता है। सामान्यतः नवाचार, हम ऐसे प्रयासों को कहते हैं जिनमे कम से कम तीन तत्व जरुर हों, पहला– वह खोज या प्रयोग के लिहाज से एकदम नया हो, दूसरा–यह उपयोगी हो, तीसरा–यह किसी समस्या के समाधान के लिए हो और सोद्देशय हो। इन आधारों पर शिक्षक द्वारा किया गया प्रयास नवाचार की श्रेणी में शामिल किया जाना चाहिए, भले ही यह छोटे स्तर पर ही किया गया हो। यह नवाचार सम्मान, प्रशंसा या मीडिया में कवरेज पाने की दृष्टि से ना किया गया हो वरन इसको वास्तविक कक्षा–कक्ष की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अपनाया गया हो, इससे सीखने वाले को मदद मिली हो, सीखने वाले की शैक्षिक जरूरतें पूरी कर पाया हो, विषय के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मददगार हो और अंततः शिक्षा के लक्ष्यों तक पहुँचने में सहायक हो। यदि ऐसा संभव हो पता है तब ही हम कह सकते हैं की शिक्षण की प्रभावकारिता में नवाचार की भूमिका है।

6. **संवेदनशीलता–** सार्वजानिक शिक्षा का एक अहम् पहलू यह है कि इस प्रणाली में नामांकित अधिसंख्यक बच्चे विषम एवं अलाभकर परिस्थितियों से आते है, ऐसे बच्चों के बहिष्करण के खतरे मेशा मौजूद रहते हैं। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में इन बच्चों के साथ विशेष संवेदनशीलता बरतें की जरुरत है, उनकी भाषा–बोली, संस्कृति, को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में स्थान देने की जरुरत होती है। वैसे भी शिक्षक के लिए जरुरी है कि कक्षा में मौजूद प्रत्येक अधिगम कर्ता के प्रति संवेदनशीलता बरतें। यह समवेदनशीलता इस लिहाज से भी जरुरी है कि शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया के

मनोनुकूल परिणाम ना मिलने के बावजूद शिक्षक, अधिगमकर्ता में विश्वास बनाये रखें, इसके लिए सतत धैर्य की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा मूल्य है, जो प्रत्येक अधिगमकर्ता में यह विश्वास पैदा कर सकता है कि वह भी सीख सकता है, अपनी गति एवं तरीके से सीख सकता है, देर–सबेर एक दिन वह भी सीख ही लेगा, कक्षा प्रक्रिया में उसकी सहभागिता बढ़ा सकता है। यह विश्वास शिक्षक की प्रभावकारिता का महत्वपूर्ण संकेतक है, बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि उपरोक्त अन्य घटकों में कुछ कमी के बावजूद संवेदनशीलता के कारण अपनी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावकारी बनाये रख सकता है, इसके विपरीत उपरोक्त सभी बातों के होने के बावजूद संवेदनशीलता की कमी के कारण शिक्षण एक रूटीन मात्र रह जाता, प्रभावकारी नहीं हो पाता।

उपरोक्त घटकों पर विचारोपरांत हम शिक्षक की प्रभावकारिता हेतु एक उपयुक्त फ्रेमवर्क की संरचना पर विचार कर सकते हैं। अग्रांकित प्रारूप में इसे प्रस्तावित किया जा सकता है–

शिक्षक की प्रभावकारिता के आंकलन हेतु प्रस्तावित फ्रेमवर्क

विषय................................उपविषयध्पाठ ....थीम / अवधारणा / संबोध.................................

प्रभावी शिक्षण हेतु प्रयास	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सम्यक उपयोग	विषयगत अधिगम संप्राप्ति	शिक्षा के सामान्य उद्देशों की संप्राप्ति से संगति	शिक्षा की गुणवत्ता-विद्यार्थी के व्यवहार में परिलक्षित	प्रभावी शिक्षण
1	२	3	4	5	6
विषय ज्ञान एवं उसके उद्देश्यों की स्पष्टता हेतु प्रयास		निर्धारित अधिगम स्तर की संप्राप्ति	अधिगम स्तर की संप्राप्ति शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की संगति में है/नहीं है	अधिगम का विद्यार्थी के व्यवहार में परिलक्षित होना	शिक्षण की प्रभावकारिता
उपयुक्त शिक्षण शास्त्र का प्रयोग					
शिक्षण हेतु उपयुक्त मनोविज्ञान का सन्दर्भ					
नवाचारी गतिविधियाँ					
समावेशी कक्षा-कक्ष					
आवश्यकता अनुसार आई0सी0टी0 का उपयोग					
अन्य					

व्याख्या

उपरोक्त फ्रेमवर्क में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सम्यक उपयोग के द्वारा इस बात का आंकलन किया जा सकता है कि शिक्षक के समस्त प्रयास शिक्षक अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में किस प्रकार से मददगार हैं। इसके लिए शिक्षक की कक्षा–कक्ष प्रक्रिया का अवलोकन किया जाना होगा तथा अवलोकन के आधार पर यह जानने–समझने में मदद मिल सकगी कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया प्रभावी शिक्षण की ओर ले जा रही है या नहीं। यदि इसमें कोई विचलन है तो इसी स्तर पर इसका संज्ञान लेकर शिक्षक को फीड बैक देने की जरुरत होगी, इसे फ्रेम वर्क के कॉलम 2 में अंकित किया जा सकता है। कॉलम 3 में निर्धारित अधिगम स्तर की संप्राप्ति का समय–समय पर आंकलन करने के बाद कॉलम 3 में इस बारे में विवरणात्मक आंकना की जाएगी। यदि विद्यार्थी निर्धारित दक्षता प्रापर्ट करने में सफल नहीं हो पाते तो एक बार पुनः शिक्षक को फीड बैक देने की जरुरत होगी। कॉलम 4 में इस बात की आंकना की जायेगी की अमुक अधिगम स्तर की संप्राप्ति शिक्षा के कौन से लक्ष्यों की संगति में हैं और किस प्रकार से हैं। कॉलम 5 में विद्यार्थी के कक्षा–कक्ष एवं कक्षा के बाहर के व्यवहार के अवलोकन के आधार पर अंकना की जायेगी कि विद्यार्थियों के व्यवहार में क्या–क्या बदलाव नजर आते हैं और इनके साक्ष्य क्या हैं? अंतिम कॉलम 6 में विगत सभी कॉलम के निष्कर्षों के आधार पर इस बात का निर्णय लिया जा सकता है कि शिक्षक विशेष का शिक्षण प्रभावकारी है / नहीं है। अर्थात कॉलम 2 से कॉलम 5 तक की समस्त निष्पतियों के समग्र आंकलन के आधार पर ही शिक्षक की प्रभावकारिता की सही तस्वीर सामने आएगी।

निष्कर्ष

अतः उपरोक्त विमर्श के आलोक में निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि किसी भी स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता अन्य बातों के अलावा इस बात पर निर्भर करती है की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया कितनी प्रभावी है? और इससे इस बात का अनुमान मिलता है कि शिक्षक की प्रभावकारिता (Teacher's Effectiveness) का स्तर क्या है? शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में संलग्न दोनों ही पक्ष (शिक्षक एवं विद्यार्थी), तात्कालिक रूप में, इस प्रभावकारिता को अनुभूत कर सकते हैं, बाह्य पक्ष इस बारे में केवल अनुमान लगा सकते हैं। यहाँ इतना जरुर कहा जा सकता है कि प्रभावकारी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लक्ष्य के लिए एक जरुरी आधार है। स्कूलों और उसमें भी कक्षा–कक्ष को एक ऐसे सन्दर्भ की तरह पोषित करने की जरुरत है, जिसमे बच्चे स्वयं को सुरक्षित, स्वीकृत एवं खुश महसूस करें, सीखने का आनन्द उठा सकें और शिक्षक व्यावसायिक रूप से संतोष का अनुभव कर सकें, शिक्षण की सार्थकता को महसूस कर सकें, इस प्रकार इन दोनों के साझा अनुभवों को शिक्षण की प्रभावकारिता के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन एक शुरूआती प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत है, यकीनन इसको व्यवहारिक रूप से जांचे परखे जाने की जरुरत होगी। इसके बावजूद यह अध्ययन निम्नांकित दृष्टि से उपयोगी होगा–

- शिक्षक की प्रभावकारिता के बारे में अवधारणात्मक समझ बनाने में मदद मिल सकेगी, भले ही यह एकदम शुरूआती विचार के रूप में ही हो।
- किसी भी विद्यालय के प्रभावकारी होने में किस–किस शिक्षक की प्रभावकारिता का योगदान है? यह पता लगामे में मदद मिल सकगी।
- प्रभावी शिक्षण के आंकलन हेतु एक फ्रेमवर्क की जरुरत कुछ हद तक पूर्ण हो सकेगी।
- शिक्षक की प्रभावकारिता के आंकलन के लिए आंकलन बिन्दुओं की स्पष्टता रहेगी।
- शिक्षक की प्रभावकारिता की सही तस्वीर सामने आएगी, इसके अभाव में नवाचार के नाम पर बहुत बार ऐसे परिदृश्य सामने आते हैं कि इससे शिक्षक को तो पुरस्कार का लाभ मिल गया मान्यता मिल गयी परन्तु इसका वास्तविक लाभ विद्यार्थी को नहीं मिल पाया अर्थात शिक्षण की प्रभावकारिता में कोई वृद्धि नहीं हो सकी।
- शिक्षक की प्रभावकारिता के आधार पर प्रोत्साहन एवं अभिप्रेरण हेतु निर्णय लेने के लिए तार्किक निर्णय लेने में मदद मिलेगी, जैसे शिक्षक पुरस्कार, पद्दोनती, स्थानांतरण के बारे में पारदर्शी निर्णय लेने में आसानी होगी।

इस फ्रेमवर्क के आधार पर, शिक्षक की प्रभावकारिता के बारे में नीति विषयक निर्णय लेने में मदद मिल सकेगी।

Acknowledgemwent

I do feel obliged from the core of my heart to Prof. Depak Paliwal sir, for his continuous guidance and motivation for writing this research article. Otherwise it could not be possible. **(5209 शब्द)**

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अकीरी, ए.ए. एवं एन.एम. उग्बोरूग्बो, २००९,'टीचर्स इफेक्टिवनेस एंड स्टूडेंट्स एकेडेमिक परफॉरमेंस इन पब्लिक सेकेंडरी स्कूल्स इन डेल्टा स्टेट्स.' नाइजीरिया स्ट्राइटिस ऑन होम एंड कम्युनिटी साइंस, 3 (२), 107–113.

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा (2005), प्रथम संस्करण मई 2006, प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016. पृष्ठ 9–10.
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा (2005), प्रथम संस्करण मई 2006, प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016. पृष्ठ 11.